इकाई 10 नई समीक्षा

इकाई की रूपरेखा

10.0 उद्देश्य

10.1 प्रस्तावना

10.2 नई समीक्षा का आशय

10.3 पाश्चात्य नई समीक्षा

10.4 नई समीक्षा के प्रमुख विचारक और उनकी स्थापनाएँ

10.4.1 जॉन क्रो रैंसम

10.4.2 विलियम एम्पसन

10.4.3 विमसैट

10.4.4 क्लीन्थ ब्रूक्स

10.4.5 एलन टेट

10.5 हिंदी की नई समीक्षा

10.6 नई समीक्षा : पाश्चात्य दृष्टि और भारतीय दृष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

10.7 सारांश

10.8 अवधारणात्मक शब्द

10.9 उपयोगी पुस्तकें

10.10 बोध प्रश्न

10.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

10.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़कर आप :

- नई समीक्षा की अवधारणा के बारे में बता सकेंगे;
- पाश्चात्य नई समीक्षा और उसके स्वरूप से अवगत हो सकेंगे;
- नई समीक्षा के प्रमुख विचारकों और उनकी स्थापनाओं के बारे में जान सकेंगे;
- हिंदी की नई समीक्षा से अवगत हो सकेंगे; और
- नई समीक्षा की पाश्चात्य दृष्टि और भारतीय दृष्टि का तुलनात्मक अध्ययन कर सकेंगे।

10.1 प्रस्तावना

शाब्दिक अर्थों में आलोचना का अर्थ है, किसी भी कृति को संपूर्णता या समग्रता में देखना। आलोचना के लिए समालोचना तथा समीक्षा शब्दों का प्रयोग भी किया जाता है। स्पष्ट है कि आलोचना गुण-दोष विवेचन से परे किसी भी कृति को उसकी संपूर्णता में देखना है। आलोचना के दो प्रकार होते हैं– सैद्धांतिक आलोचना और व्यावहारिक आलोचना। सैद्धांतिक आलोचना वह है, जिसमें किसी सिद्धांत के आधार पर किसी रचना का मूल्यांकन/विश्लेषण किया जाता है। व्यावहारिक आलोचना में

BHDC-107_NEW SETING.indd 112 18-03-2021 09:32:59

किसी कृति का मूल्यांकन सिद्धांत के अनुप्रयोग द्वारा करते हैं। सैद्धांतिक आलोचना की अलग-अलग पद्धतियाँ हैं। ऐतिहासिक आलोचना, स्वच्छंदतावादी आलोचना, मार्क्सवादी आलोचना, समाजशास्त्रीय आलोचना, मनोविश्लेषणवादी आलोचना, नई समीक्षा आदि। आलोचना की अलग पद्धतियाँ सिद्धांत हैं।

इस इकाई में हम आपको नई आलोचना का क्या आशय है, नई समीक्षा की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं, नई समीक्षा की सीमाएँ क्या हैं, नई समीक्षा के प्रमुख विचारक और उनके सिद्धांत, हिंदी की नई समीक्षा और उसके प्रमुख विचारकों की जानकारी देंगे।

10.2 नई समीक्षा का आशय

नई समीक्षा अंग्रेजी के The New Criticism का हिंदी अनुवाद है। इसे कुछ विद्वान The Ontalogical Criticism भी कहते हैं। नई समीक्षा शब्द का सबसे पहली बार प्रयोग प्रतिष्ठित अमेरिकी आलोचक जे. ई. स्पिनगार्न (1875–1939) ने सन् 1910 में कोलंबिया विश्वविद्यालय में दिए गए अपना भाषण में किया, जिसका शीर्षक 'नई समीक्षा' (The New Criticism) था। आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली के रूप में 'नई समीक्षा' को व्यापक स्वीकृति प्रदान करने का श्रेय जान क्रो रैंसम को दिया जाता है, जिनकी सन् 1941 में प्रकाशित पुस्तक का शीर्षक ही था – *New Criticism* नई समीक्षा पर प्रकाश डालते हुए प्रो. राजनाथ लिखते हैं– नई समीक्षा ऐतिहासिक आलोचना की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप अस्तित्व में आई। यह कहा जा सकता है कि इसका उदय एलियट के *'द सेक्रेड वुड'* के प्रकाशन के साथ-साथ, 1920 ई में ही हो चुका था; यद्यपि हमने यह नाम, जान क्रो रैंसम की पुस्तक *'द न्यू क्रिटिसिज्म'* (1941) से काफी बाद में ग्रहण किया। रिचड्र्स के योगदान से समन्वित होने के बाद चौथे दशक में कहीं जाकर इसने एक आंदोलन का रूप ग्रहण किया। इस प्रकार एलियट और रिचड्र्स को नई समीक्षा का प्रवर्तक माना जा सकता है क्योंकि उन्होंने ऐसी आधार भूमि प्रस्तुत की जिस पर नए समीक्षकों ने मूल पाठ के सूक्ष्म भाषिक अध्ययन की विधि का निर्माण किया। (*पाश्चात्य काव्यशास्त्र : नई प्रवृतियाँ*)। वस्तुतः नई समीक्षा टी. एस. एलियट, एजरा पाउंड, मिडल्टन मरे, टी. ई. ह्यूम और आई. ए. रिचड्र्स से प्रेरित और प्रभावित आलोचना का वह आंदोलन है, जिसने आलोचना के अन्य आंदोलनों– मार्क्सवादी, मनोविश्लेषणात्मक, स्वच्छंदतावादी तथा ऐतिहासिक, समाजशास्त्रीय आलोचना आदि को प्रश्नांकित करते हुए रचना की स्वायत्तता और वस्तुनिष्ठता पर सर्वाधिक बल दिया। नई समीक्षा से संबद्ध प्रमुख आलोचकों में जान क्रो रैंसम, विलियम एम्पसन, विमसैट, बुक्स, एलन टेट और आर. पी. ब्लैकमर का उल्लेख किया जा सकता है।

नई समीक्षा के संदर्भ में महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि न तो वह वर्ग-संघर्ष देखती है, न ही समाज की जड़ताओं और वैशिष्ट्य को साथ ही यह स्वच्छंदतावादी आलोचना की तरह भावुकता को भी दृष्टि में नहीं रखती है वरन् कृति को एक भाषिक संरचना मानते हुए उसकी आलोचना करती है। यही कारण है कि नई समीक्षा के समीक्षकों ने न तो किसी विचारधारा विशेष का सहारा लिया है और न ही किसी कला या सौंदर्यशास्त्र के सिद्धांत की स्थापना की है। पश्चिम के इस नई समीक्षा आंदोलन का हिंदी साहित्य पर भी गहरा असर पड़ा और नई कविता के समानांतर आलोचना की एक पद्धति के रूप में नई समीक्षा भी प्रकाश में आई।

10.3 पाश्चात्य नई समीक्षा

यद्यपि पाश्चात्य नई समीक्षा की शुरुआत स्पिनगार्न की पुस्तक के प्रकाशन वर्ष 1941 से मानी जाती है, तथापि नई समीक्षा की पीठिका निर्मित करने में टी. एस. एलियट के *'द सैक्रेड वुड'* (1920), मिडल्टन मरे की *'द प्रॉब्लम ऑफ़ स्टाइल'* (1922) और

BHDC-107_NEW SETING.indd 113 18-03-2021 09:32:59

आई. ए. रिचर्ड्स की *'द प्रिंसिपल्स ऑफ़ लिटरेरी क्रिटिसिज्म'* (1924) सदृश रचनाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। नई समीक्षा का सर्वाधिक विरोध ऐतिहासिक आलोचना से रहा है। ऐतिहासिक आलोचना जहाँ किसी कृति के मूल्यांकन में रचनाकार और ऐतिहासिक संदर्भों को ध्यान में रखती है, वहीं दूसरी ओर नई आलोचना केवल रचना को दृष्टिगत रखती है। कहने का अर्थ यह है कि नई समीक्षा केवल कागज पर लिखे हुए शब्द का विश्वास करती है। दूसरे शब्दों में कहें तो कह सकते हैं कि नई समीक्षा का सूत्र वाक्य है The Words Written On Page. नई समीक्षा किसी भी रचना को स्वायत्त मानती है। समीक्षा की इस पद्धति के अंतर्गत किसी भी रचना को पूर्ण रूप से निरपेक्ष एवं उसकी एक स्वतंत्र इयत्ता (Definite Entity) मानते हुए, रचना का मूल्यांकन किया जाता है। संभवतः नई समीक्षा की इसी स्वतंत्र, निरपेक्ष एवं पूर्ण प्रकृति को ध्यान में रखते हुए ही इसे सात्विक आलोचना भी कहा गया है। सात्विक आलोचना (Ontological Criticism) वस्तुतः युग और परिस्थितियों से पूर्णतया स्वतंत्र, रचनाकार से अलग कृति के महत्व को स्वीकारती है। एक तरह से यह सत्य को अपनाने की सर्वथा अलग विधि है। इस प्रकार नई समीक्षा किसी भी रचना के सघन पाठ विश्लेषण (Close Textual Analysis Or Reading) पर बल देती है। यह पाठ विश्लेषण इस तथ्य पर आधारित होता है कि कोई भी कृति एक स्वायत्त इकाई है और उस कृति का वस्तुपरक (Objective) विश्लेषण रचना के भीतर प्रयुक्त शब्दों, बिंबों और प्रतीकों के आधार पर होना चाहिए। अतः स्पष्ट रूप से यह कहा जा सकता है कि किसी सामाजिक, दार्शनिक या वर्गीय विचारधारा के स्थान पर नई समीक्षा कृति के कृति के रूप में मूल्यांकन पर बल देती है।

नई समीक्षा कृति को एक भाषिक संरचना मानती है। इस समीक्षा पद्धति से संबद्ध विभिन्न समीक्षकों– जान क्रो रैंसम, क्लीन्थ ब्रुक्स, एलेन टेट, एफ. आर. लीविस, टिलियर्ड, एम्पसन आदि ने किसी भी कृति को विशिष्ट संरचना मानते हुए अपने-अपने ढंग से कृति के मूल्यांकन के प्रतिमान निर्मित किए। जान क्रो रैंसम ने बुनावट (Texture) और निर्मिति (Structure) के आधार पर कविता के मूल्यांकन की बात की। क्लीन्थ ब्रुक्स के अनुसार, विरोधाभास (Paradox) और विडंबना (Irony) के आधार पर किसी कृति को समझा जा सकता है। एलेन टेट ने तनाव सिद्धांत का प्रतिपादन किया। लीविस कविता समीक्षक थे, जिन्होंने रूपाकार को महत्व दिया। एम्पसन ने अनेकार्थकता (Ambiguity) सिद्धांत के द्वारा यह बताने की चेष्टा की कि किसी रचना में अर्थ के अनेक स्तर होते हैं और उनको समझने के पश्चात् ही रचना को समझा जा सकता है। टिलियर्ड ने वक्रोक्ति या व्यंग्यार्थ के द्वारा रचना को समझाने की बात की। कहने का अर्थ यह है कि किसी भी रचना को भाषिक संरचना मानने पर उसके विश्लेषण के अनेक पक्ष खुल जाते हैं। इस प्रकार नए समीक्षकों ने रचना की परतों के भीतर जाकर उसे समझने-समझाने पर जोर दिया।

शैली विज्ञान और नई समीक्षा के अंतःसंबंध की भी चर्चा की जाती है। इसका कारण यह है कि शैली विज्ञान भी नई समीक्षा की तरह काव्य को एक भाषिक संरचना मानता है। शैली विज्ञान और नई समीक्षा के अंतःसंबंधों पर प्रकाश डालते हुए प्रो.रामचंद्र तिवारी लिखते हैं – ''शैली विज्ञान, काव्यशास्त्र और भाषा विज्ञान की संकरता का परिणाम है। अपनी स्थापनाओं में यह नई समीक्षा की मान्यतों के अत्यंत निकट है। फिर भी नई समीक्षा और शैली विज्ञान में अंतर किया जा सकता है। नए समीक्षकों ने काव्यभाषा संबंधी जिन विशेषताओं को लक्षित किया है, वे उनके काव्य-सौंदर्य अन्वेषी-अंतर्दृष्टि के परिणाम हैं। उनके पीछे कोई भाषाशास्त्रीय दृष्टि नहीं है, जबकि शैली विज्ञान के निर्णय निश्चित वैज्ञानिक तर्क पर आधृत हैं।'' (*आधुनिक हिंदी आलोचना : संदर्भ और दृष्टि*)। नई समीक्षा का वैशिष्ट्य इस तथ्य में भी निहित है कि यह कृति के आवयविक संगठन में विश्वास करती है। अर्थात किसी भी रचना को खंड-खंड में न देखकर यह उसके समग्र मूल्यांकन पर बल देती है। रचना का

BHDC-107_NEW SETING.indd 114 18-03-2021 09:32:59

आतंरिक संगठन या रचना को एक इकाई के रूप में देखना नई समीक्षा की महत्वपूर्ण विशेषता है। सूत्र रूप में नई समीक्षा की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं –

1) नई समीक्षा कृति के भाषिक विश्लेषण को सर्वाधिक महत्व देती है।

2) नई समीक्षा कृति के वस्तुपरक (Objective) मूल्यांकन पर बल देती है। यह किसी विचारधारा विशेष को प्रश्रय नहीं देती है।

3) नई समीक्षा कृति के गहन पाठ (Close Textual Analysis Or Reading) को दृष्टिगत रखता है।

4) नई समीक्षा कृति के मूल्यांकन में ऐतिहासिक सामाजिक संदर्भों; देश काल और परिस्थिति के बरक्स कृति को एक स्वायत्त इकाई मानती है और उसके निरपेक्ष मूल्यांकन की माँग करती है।

नई समीक्षा की सीमाएँ

नई समीक्षा का आंदोलन अपनी अनेक उपलब्धियों के बावजूद भी कतिपय सीमाएँ रखता हैं। नई समीक्षा ने जिस भाषिक विश्लेषण पर सर्वाधिक बल दिया था, उसे लेकर इस पर अनेक आरोप लगाए गए। यह कहा गया कि किसी भी रचना को जब हम एक भाषिक संरचना मानते हैं और जब अर्थ निकलने के लिए उस संरचना को तोड़ते हैं तो काव्य की मूल आत्मा रस का क्षरण हो जाता है। इस प्रकार काव्यास्वादन और रसानुभूति का आनंद समाप्त हो जाता है। नई समीक्षा पर सबसे पहले आर. एस क्रेन के नेतृत्व में शिकागो समीक्षकों ने आरोप-प्रत्यारोप लगाए। इस शिकागो संप्रदाय के समीक्षकों ने यह जोर देकर कहा कि नए समीक्षक एकलवादी तथा रूढ़िवादी हैं और भाषिक संरचना की विश्लेषण पद्धति छोटी रचनाओं के लिए तो उपादेय है किन्तु कथा प्रधान काव्यों, प्रबंधात्मक कृतियों और महाकाव्यात्मक रचनाओं के विश्लेषण में यह पद्धति नितांत अनुपयोगी और निरर्थक है।

10.4 नई समीक्षा के प्रमुख विचारक और उनकी स्थापनाएँ

नई समीक्षा आंदोलन के विकास में विभिन्न विचारकों और महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। इन आलोचकों का महत्व इस दृष्टि से बढ़ जाता है कि जहाँ एक तरफ इन सभी ने तत्कालीन आलोचना के विभिन्न सम्प्रदायों का एकजुट होकर विरोध किया, वही दूसरी ओर लगभग सभी ने अपनी मौलिक स्थापनाएँ भी प्रस्तुत की। नई समीक्षा आलोचना पद्धति की पीठिका टी. एस. इलियट, एजरा पाउंड, एफ. आर. लीविस, आई. ए. रिचर्ड्स के प्रयत्नों से निर्मित हुई। नई समीक्षा आंदोलन के प्रमुख आलोचकों में जान. क्रो. रैंसम के साथ-साथ, रॉबर्ट पेन वारेन, क्लीन्थ ब्रुक्स, एलेन टेट, आर. पी. बलैकमर, आइवर विंटर उल्लेखनीय हैं।

10.4.1 जान क्रो रैंसम

नई समीक्षा आंदोलन के विकास में जान क्रो रैंसम की ऐतिहासिक भूमिका है। रैंसम ही वह व्यक्ति हैं जिनके कारण आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली के रूप में नई समीक्षा को स्वीकृति मिली। प्रोफेसर रैंसम की सन् 1941 में प्रकाशित पुस्तक का शीर्षक ही था – *New Criticism* कृति के भाषिक विश्लेषण के क्रम में रैंसम ने सर्वप्रथम टेक्शचर और स्ट्रक्चर के महत्व को रेखांकित किया। रैंसम ने कहा कि टेक्शचर और स्ट्रक्चर में सतत संघर्ष चलता रहता है। कोई भी कविता या कृति इसी संघर्ष की अंतिम परिणति होती है। दूसरे शब्दों में अगर कहा जाए तो कह सकते हैं हैं कि रैंसम ने 'शब्द विधान' और अर्थ-विधान के सहयुग्म को काव्य माना है। अपने इस शब्द-विधान और अर्थ-विधान के तनाव सिद्धांत को रैंसम ने एक सजीव कमरे के बिम्ब द्वारा स्पष्ट किया है।

BHDC-107_NEW SETING.indd 115 18-03-2021 09:32:59

10.4.2 विलियम एम्पसन

विलियम एम्पसन की ख्याति का आधार उनका प्रसिद्ध ग्रंथ– *'सेवेन टाइप्स ऑफ एम्बिगुटी'* है। इस आलोचनात्मक ग्रंथ का प्रकाशन सन् 1930 में हुआ। इस ग्रंथ से नई समीक्षा को एक नई गति एवं दिशा मिली। अंग्रेजी शब्दकोश के अनुसार, एम्बिगुटी शब्द का अर्थ है जिसको समझना कठिन हो। उदाहरण के लिए, किसी व्यक्ति के संदर्भ में यह कहा जाता है कि उसके व्यक्तित्व को समझना कठिन है। इसका दूसरा अर्थ यह हुआ कि जिसके अनेक अर्थ हों अर्थात कोई एक अर्थ सीधा-सीधा ध्वनित न हो रहा हों। अतः एम्बिगुटी को हम अनेकार्थकता कह सकते हैं। एम्पसन ने सात प्रकार की अनेकार्थकता की चर्चा की है। वस्तुतः अनेकार्थकता का संबंध काव्यभाषा से है। रचनात्मक भाषा या काव्यभाषा में अर्थ के अनेक स्तर होते हैं। यह सामान्य भाषा की तरह इकहरी या एकार्थी नहीं होती। किसी काव्य में निहित अनेकार्थकता को समझने के लिए कुशलता की आवश्यकता होती है। काव्य का कोई मर्मी पाठक ही अर्थ के इस स्तर को समझ सकता है। विलियम एम्पसन को यह शब्द संभवतः मनोविज्ञान की शब्दावली से मिला जिसका अनुप्रयोग उन्होंने काव्य संरचना पर किया।

10.4.3 विमसैट

विमसाट का पूरा नाम विलियम के विमसैट है। नई समीक्षा के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए विमसैट ने दो नए पदबंधों का प्रयोग किया – Intentional Fallacy (अभिप्राय परक हेत्वाभास) और Affective Fallacy (भावात्मक हेत्वाभास)। ये दोनों पारिभाषिक शब्द उनकी पुस्तक *'द वर्बल आइकनः स्टडीज इन द मीनिंग ऑफ़ पोयट्री'* (1954) के दो अध्याय हैं और इन्हे लिखने में विमसैट ने मानरो बीयर्डस्ले की सहायता ली है। विमसैट अभिप्रायपरक हेत्वाभास को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि किसी कृति के मूल्यांकन रचनाकार के मनोगत अभिप्राय की जानकारी का होना आवश्यक नहीं है। इस जानकारी के न होने से कृति के मूल्यांकन में किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न नहीं होती है, वरन् यह कृति के निरपेक्ष मूल्यांकन में सहयोग ही प्रदान करती है। इसी प्रकार 'भावात्मक हेत्वाभास' विमसैट के अनुसार रचना का पाठक या श्रोता के मन पर जो असर पड़ता है, उससे भी कविता के मूल्यांकन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए। अतः यह स्पष्ट है कि विमसैट किसी रचना के तटस्थ मूल्यांकन के प्रति आग्रहवान हैं और हमें सचेत करते हैं कि रचना का मूल्यांकन कृति में निहित अर्थ पर निर्भर होना चाहिए न कि रचनाकार और पाठक पर।

10.4.4 क्लीन्थ ब्रुक्स

क्लीन्थ ब्रुक्स नई समीक्षा के अत्यंत महत्वपूर्ण विचारक हैं। ब्रुक्स येल (Yale) विश्वविद्यालय में प्रोफेसर थे। इन्होंने अनेक आलोचनात्मक पुस्तकें लिखीं। *'अण्डरस्टैंडिंग पोयट्री', 'अण्डरस्टैंडिंग फिक्शन'* तथा *'अण्डरस्टैंडिंग ड्रामा'* इनकी चर्चित पुस्तकें हैं। नई समीक्षा की भाषिक संरचना को ब्रुक्स विरोधाभास (Paradox) और विडंबना (Irony) प्रत्ययों के सहारे व्यक्त करते हैं। इसीलिए ब्रुक्स को विरोधाभास सिद्धांत का अत्यंत महत्वपूर्ण विचारक माना जाता है। ब्रुक्स का मानना था कि विरोधाभासी शब्दों के संयोजन से कवि अपनी रचना को निर्मित करता है। दूसरे शब्दों में ब्रुक्स ने इसे उदाहरण के द्वारा इस प्रकार समझाया है कि कोई साहित्यिक कृति विज्ञान से इसीलिए अलग होती है क्योंकि वैज्ञानिक सत्य को सीधे प्रकट करता है जबकि रचनाकार विरोधी चीजों और तथ्यों के संयोजन से चमत्कार उत्पन्न करता है। क्लीन्थ ब्रुक्स ने कविता के आवयविक अन्विति पर भी बहुत अधिक बल दिया। उनका मानना था कि कविता एक अखंड निर्मिति है। जिस तरह एक वृक्ष के निर्माण में अनेक उपादानों की भूमिका है, कविता भी कुछ उसी प्रकार होती है।

BHDC-107_NEW SETING.indd 116 18-03-2021 09:32:59

10.4.5 एलन टेट

एलन टेट को तनाव सिद्धांत का प्रवर्तक माना जाता है। एलन टेट का रचनाकार व्यक्तित्व बहुआयामी था। वे कवि-संपादक-आलोचक और निबंधकार थे। किसी भी कृति में तनाव का होना वे आवश्यक मानते हैं। उन्होंने दो प्रकार के तनावों की चर्चा की है। बाह्य और आतंरिक तनाव। बाह्य तनाव किसी कृति की शुरुआत से अंत तक की गति है और आतंरिक तनाव कृति में निहित संवेदना और आलंकारिकता आदि। एक अच्छी कविता का जन्म इन्हीं तनावों के बीच होता है। तनाव सिद्धांत के अलावा एलन टेट ने प्रतीकात्मक कल्पना की भी बात की।

10.5 हिंदी की नई समीक्षा

हिंदी की नई समीक्षा को लेकर विद्वानों में मतभेद है। पहला प्रश्न तो यही उठता है कि हिंदी की नई समीक्षा क्या पश्चिम की ही नई समीक्षा का अनुकरण है या यह उससे अलग है? समग्रता में विचार करने पर यह तथ्य सामने आता है कि हिंदी आलोचना में एक दौर आया है जब बहुत सारे आलोचकों और कवि-आलोचकों ने पश्चिम की नई समीक्षा पद्धति को आत्मसात करते हुए नये सिरे से हिंदी की रचनाशीलता पर विचार किया। दूसरा प्रश्न यह उठता है कि हिंदी में पारिभाषिक शब्दावली के रूप में नई समीक्षा का आरंभ कब से माना जाय? वस्तुतः हिंदी साहित्य में नई समीक्षा का आरंभ 'परिमल' की स्थापना से माना जा सकता है। प्रो. रामचंद्र तिवारी हिंदी में जहाँ नई समीक्षा की शुरुआत 'नई कविता' की प्रतिष्ठा के साथ मानते हैं वहीं दूसरी ओर प्रो. सत्यदेव मिश्र इसका आरम्भ सन् 1947 से मानते हैं।

हिंदी की नई समीक्षा के विकास में सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान 'परिमल मंडली' के रचनाकारों-आलोचकों ने दिया। नई कविता और तत्कालीन रचनाशीलता को व्यापक परिप्रेक्ष्य में उजागर करने के लिए इन लोगों ने लगभग नई समीक्षा की पद्धति को अपनाया। यह नई समीक्षा अगर एक तरफ पश्चिम की भाषिक संकल्पना को केंद्र में रखती थी तो दूसरी ओर इसने भाव और कथ्य को भी सिरे से नकारा नहीं। हिंदी की नई समीक्षा का दृष्टिकोण पश्चिम की तरह चीड़-फाड़ वाला न होकर भावात्मक और कुछ सीमा तक रसवादी भी था। यद्यपि यहाँ इस तथ्य से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि हिंदी की नई समीक्षा मार्क्सवादी आलोचना और रसवादी आलोचना इन दोनों ध्रुवांतों से पृथक मूल्यांकन का वस्तुनिष्ठ अपनाती है। यहाँ यह भी ध्यान देने योग्य है कि हिंदी की नई समीक्षा ने पश्चिम की नई समीक्षा के विपरीत रचना को अनेक बार ऐतिहासिक संदर्भों में परखने का प्रयास भी किया है। हिंदी के नये समीक्षकों ने हिंदी आलोचना को अनेक नये प्रत्यय भी दिए। इस संदर्भ में लक्ष्मीकांत वर्मा द्वारा प्रयुक्त *'लघु मानव'*, डॉ. जगदीश गुप्त के *'अर्थ की लय'*, विजयदेवनारायण साही की 'सहज मानव' तथा रामस्वरूप चतुर्वेदी की *'काव्यभाषा की संकल्पना'*, अज्ञेय के *'मौन का विभावन'* की चर्चा की जा सकती है।

हिंदी की नई समीक्षा बहुत सीमा तक पश्चिम की नई समीक्षा से प्रेरित और प्रभावित है, तथापि इसका अपना वैशिष्ट्य है। लक्ष्मीकांत वर्मा, डॉ. नगेंद्र, डॉ. रघुवंश, डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, मुक्तिबोध, डॉ. रामचंद्र तिवारी और डॉ. निर्मला जैन प्रभृति आलोचकों ने इसे स्पष्ट करने की कोशिश की है। इस दृष्टि से डॉ. नगेंद्र की पुस्तक 'नई समीक्षाः नये संदर्भ', डॉ. रघुवंश की 'साहित्य का नया परिप्रेक्ष्य', लक्ष्मीकांत वर्मा की 'नये प्रतिमान : पुराने निकष', मुक्तिबोध की 'नये साहित्य का सौंदर्यशास्त्र' पुस्तकों का उल्लेख किया जा सकता है। इन सभी आलोचकों ने हिंदी की नई समीक्षा को अपने-अपने ढंग से स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

हिंदी की नई समीक्षा के प्रमुख आलोचकों में अज्ञेय, लक्ष्मीकांत वर्मा, जगदीश गुप्त, धर्मवीर भारती, रामस्वरूप चतुर्वेदी, विजयदेव नारायण साही, निर्मल वर्मा, रमेशचंद्र

BHDC-107_NEW SETING.indd 117 18-03-2021 09:32:59

शाह, सत्यप्रकाश मिश्र आदि का उल्लेख किया जा सकता है। '*कविता के नए प्रतिमान*' पुस्तक नामवर सिंह ने लिखी जिसमें उन्होंने पाश्चात्य चिंतन, रूसी रूपवाद आदि के माध्यम से कविता का मूल्यांकन किया तथा कविता के नए प्रतिमानों की स्थापना की। इस पुस्तक में मार्क्सवादी आलोचना-दृष्टि के स्थान पर नई समीक्षा की दृष्टि से मूल्यांकन पर अधिक बल है। यही कारण है कि नेमिचंद्र जैन ने इसकी आलोचना की है।

10.6 नई समीक्षा : पाश्चात्य दृष्टि और भारतीय दृष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

नई समीक्षा की संकल्पना मूलतः पश्चिम की देन है। भारतीय संदर्भों में नई समीक्षा की अवधारणा वस्तुतः पश्चिम के प्रभाव के फलस्वरूप ही आई। मुक्तिबोध, नामवर सिंह, अज्ञेय, विजयदेवनारायण साही, रामस्वरूप चतुर्वेदी, जगदीश गुप्त, लक्ष्मीकांत वर्मा आदि की पश्चिमी साहित्य और वहाँ के साहित्यिक-वैचारिक आंदोलनों की समझ अत्यंत विकसित थी। यही कारण है कि हिंदी में भी नई समीक्षा का आंदोलन पश्चिम की ही तरह विभिन्न विचारधाराओं के विरोधस्वरूप तथा नई कविता आंदोलन के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए सामने आया। हिंदी की नई समीक्षा ने भी किसी भी रचना के मूल्यांकन में भाषिक विश्लेषण पर सर्वाधिक बल दिया। यद्यपि मुक्तिबोध एवं नामवर सिंह की आलोचना पर मार्क्सवादी दृष्टि का प्रभाव अधिक रहा है। फिर भी नई समीक्षा की पाश्चात्य दृष्टि और भारतीय दृष्टि के विभेद को निम्नवत समझा जा सकता है –

1) पाश्चात्य दृष्टि रचना को निर्जीव रूप में मानते हुए सिर्फ उसके भाषिक विश्लेषण पर बल देती है, जबकि भारतीय दृष्टि कृति को भाषिक संरचना मानते हुए भी संवेदनामयी है और भावपक्ष को भी महत्व देती है।

2) पाश्चात्य नई समीक्षा जहाँ कागज़ पर लिखे हुए शब्द पर महत्व देती है वहीं भारतीय दृष्टि ने किसी कृति को ऐतिहासिक संदर्भ से विलग कर देखने के आग्रह को महत्व नहीं दिया है।

3) पाश्चात्य नई समीक्षा सीधे-सीधे विभिन्न विचारधाराओं के विरोध के फलस्वरूप सामने आई इसके विपरीत हिंदी की नई समीक्षा मार्क्सवादी और रसवादी आलोचना इन दोनों ध्रुवांतों से पूरी तरह अलग न होते हुए रचना के मूल्यांकन को एक वस्तुनिष्ठ आधार प्रदान करती है।

4) नई समीक्षा की पाश्चात्य दृष्टि अधिक रूढ़िवादी और कठोर है। पश्चिम की नई समीक्षा रचना के साथ चीड़-फाड़ जैसा व्यवहार करती है जबकि हिंदी की नई समीक्षा स्वस्थ और संतुलनवादी है।

5) पश्चिम की नई समीक्षा रूपवाद और शैली विज्ञान के अधिक निकट है जबकि हिंदी की नई समीक्षा अधिक संवेद्य और भावमयी है।

10.7 सारांश

नई समीक्षा से संबद्ध पाश्चात्य आलोचकों में जे. ई. स्पिनगार्न, जान क्रो. रैंसम, विलियम एम्पसन, विमसैट, क्लीन्थ ब्रुक्स तथा एलेन टेट का उल्लेख किया जा सकता है। नयी समीक्षा किसी भी कृति को वस्तुतः एक भाषिक संरचना मानती है। आलोचना की इस पद्धति के अंतर्गत किसी भी रचना के मूल्यांकन में सिर्फ कागज पर लिखे हुए शब्दों पर विश्वास करते हुए वस्तुनिष्ठ ढंग से कृति की परख की जाती है। नई समीक्षा एक प्रकार से किसी भी रचना के सघन पाठ पर बल देती है। इस प्रकार नई समीक्षा शैली विज्ञान और पश्चातवर्ती संरचनावाद से भी अपना सामंजस्य स्थापित करती है। पश्चिम की नई समीक्षा का प्रभाव हिंदी साहित्य पर भी

BHDC-107_NEW SETING.indd 118 18-03-2021 09:32:59

पड़ा। हिंदी में नई समीक्षा की शुरुआत नई कविता आंदोलन से मानी जा सकती है। पश्चिम का नई समीक्षा आंदोलन और हिंदी की नई समीक्षा जहाँ इस बिंदु पर समान आधारभूमि रखते हैं कि कोई भी कृति वस्तुतः एक भाषिक संरचना है, वहीं दोनों में पर्याप्त विभिन्नता भी है। पश्चिम की नई समीक्षा रचना को निर्जीव रूप में मानते हुए शिल्प पक्ष पर अधिक जोर देती है। दूसरे शब्दों में अगर कहें तो कह सकते हैं कि पाश्चात्य नई समीक्षा की प्रविधि शल्य क्रिया (Operation) जैसी है जबकि हिंदी की नई समीक्षा भाव और कथ्य के महत्व को भी स्वीकारती है। इस प्रकार हिंदी की नई समीक्षा अधिक स्वस्थ और संतुलनवादी है।

10.8 अवधारणात्मक शब्द

ऐतिहासिक आलोचना : ऐतिहासिक आलोचना किसी भी रचना के मूल्यांकन की वह पद्धति है, जिसमें कृति के साथ-साथ कृतिकार और परिवेश को भी यथेष्ट महत्व दिया जाता है। आलोचना की यह पद्धति कृति के विश्लेषण-मूल्यांकन के क्रम में ऐतिहासिक संदर्भों-रचना का जन्म किन परिस्थितियों में हुआ, रचनाकार कौन है आदि पर बल देती है।

शिकागों संप्रदाय /समीक्षक : इस संप्रदाय के अग्रणी आर. एस. क्रेन थे। शिकागो समीक्षकों ने कृति के मूल्यांकन में भाषा को अंतिम स्थान पर रखा। इन समीक्षकों ने नई समीक्षा की बड़ी कटु आलोचना की। शिकागो समीक्षक रूप विधान को महत्व देते हैं और इस प्रकार आलोचना का यह संप्रदाय बहुलवादी है।

परिमल : इलाहाबाद की एक साहित्यिक संस्था, जिसकी स्थापना 10 दिसंबर, 1944 को हुई। हिंदी की नई कविता आंदोलन से जुड़े अनेक रचनाकार और आलोचक इस संस्था से गहराई से जुड़े थे।

तारसप्तक : अज्ञेय के संपादन में सन् 1943 में प्रकाशित कविता संकलन में जिसमें सात कवि– गजानन माधव मुक्तिबोध, नेमिचंद्र जैन, भारतभूषण अग्रवाल, प्रभाकर माचवे, गिरिजाकुमार माथुर, रामविलास शर्मा और अज्ञेय संकलित हैं। तारसप्तक का आधुनिक हिंदी के विकास में ऐतिहासिक महत्व है। हिंदी में प्रयोगवादी काव्यांदोलन की शुरुआत तारसप्तक के प्रकाशन से मानी जा सकती है। अज्ञेय ने संकलित कवियों के बारे में तारसप्तक की भूमिका में लिखा था – ''वे किसी एक स्कूल के नहीं हैं, किसी मंजिल पर पहुँचे हुए नहीं हैं, अभी राही हैं – राहीं नहीं, राहों के अन्वेषी।''

शैली विज्ञान : शैली विज्ञान को अंग्रेजी में *'स्टाइलिस्टिक्स'* (Stylistics) कहते हैं। इस प्रविधि के अंतर्गत किसी भी कृति का अध्ययन वस्तुनिष्ठ और वैज्ञानिक (Objective) तरीके से भाषावैज्ञानिक और व्याकरणिक आधार पर किया जाता है। चूंकि इसकी आधारभूमि व्याकरणिक और भाषा वैज्ञानिक होती है, इसीलिए इसमें साहित्य के सौंदर्य पक्ष की अवहेलना है। डॉ. विद्यानिवास मिश्र ने शैली विज्ञान को रीति विज्ञान नाम दिया है।

10.9 उपयोगी पुस्तकें

राजनाथ, *पाश्चात्य काव्यशास्त्र नई प्रवृतियाँ,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण 2009 ई।

सत्यदेव मिश्र, *हिंदी-समीक्षा स्वरूप– विकास के संदर्भ,* उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ, प्रथम संस्करण 2005 ई।

निर्मला जैन, *नई समीक्षा के प्रतिमान,* नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, संस्करण 1992 ई।

BHDC-107_NEW SETING.indd 119 18-03-2021 09:33:00

रामचंद्र तिवारी, *आधुनिक हिंदी आलोचना संदर्भ एवं दृष्टि,* विश्ववद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, दूसरा संस्करण 2004 ई।

बच्चन सिंह, *भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र का तुलनात्मक अध्ययन,* हरियाणा साहित्य अकादेमी, चंडीगढ़, दूसरा संस्करण 1994 ई।

निर्मला जैन, कुसुम बांठिया, *पाश्चात्य साहित्य चिंतन,* राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2000 ई।

10.10 बोध प्रश्न

1) पश्चिम की नई समीक्षा का परिचय दीजिए ।

2) पाश्चात्य नई समीक्षा के विचारकों पर प्रकाश डालिए।

3) हिंदी की नई समीक्षा का परिचय दीजिए।

10.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

1) देखिए भाग 10.2

2) देखिए भाग 10.4

3) देखिए भाग 10.5 एवं 10.6

BHDC-107_NEW SETING.indd 120 18-03-2021 09:33:00